Padma Vibhushan



Shri K. K. Venugopal

Shri K. K. Venugopal (Kottayan K. Venugopal) is a Senior Advocate practicing in the Supreme Court of India.

2. Born on September 06, 1931, Shri Venugopal received his Bachelor of Law degree from the Raja Lakhamgouda Law College, Belgaum (Karnataka) in 1954. He was enrolled as an Advocate in 1954. During a long career of sixty-one years, he has appeared in some of the most important cases in the Supreme Court of India as well as the High Courts in the country. He served as Additional Solicitor General of India during 1979-80. He is a member of various Indian and International Law Associations and has been the President of many of them. He was President, Supreme Court Bar Association thrice , President, SAARCLAW (The International Association of Lawyers of the SAARC Countries), President, Union Internationale des Avocats (UIA) (The oldest among International Associations of Lawyers, with headquarters at Paris) and a member of the Executive Council of various National Law Universities. He is an Honorary member of the American Bar Association.

3. Shri Venugopal had advised the Kingdom of Bhutan and its Constitution Drafting Committee in regard to the drafting of their new Constitution. He had also advised the then President of Sri Lanka, Mrs. Chandrika Bandaranaike Kumaratunga, who had sought his advice, on the devolution of powers on the Tamil regions of Sri Lanka in 2004. He has been taking interest in legal education and has been encouraging the same by giving donations to various National Universities and Law Colleges such as donation to the National Academy of Legal Studies and Research University of Law (NALSAR), Hyderabad for setting up the M.K. Nambyar Saarclaw Centre and to his Alma-Mater, the Raja Lakhamgouda Law College, Belgaum, for construction of an auditorium. He has also set up Chairs in Constitutional Law in the name of his father, late Shri M.K. Nambyar, in the National University of Advanced Legal Studies (NUALS), Kochi, National University of Juridical Sciences (NUJS), Kolkata, the National Law School University of India (NLSUI), Bangalore and the Kannur University. Scholarships have been established for recognizing students excelling in Constitutional Law. He has delivered a number of lectures and authored a number of articles on legal topics.

4. Shri Venugopal has received various honours and awards including Padma Bhushan in 2002; Grand Cross award and medal from the Bar Association of Bogota, Columbia, as well as a medal and citation from the Bar Association of Buenos Aires and Matanza, Argentina, in recognition of his achievement in human rights and legal multilingualism and multiculturalism; Global Award 2003 from the Chief Minister of Kerala as well as the Eswara Iyer Distinguished Lawyer Award from the Kerala Bar Federation; Lifetime Achievement Award from the US-INDIA Business Council etc. He was conferred the Honoris Causa Degree of Doctor of Laws by the Utkal University, Orissa in 2010.



श्री के. के. वेणुगोपाल

श्री के.के. वेणुगोपाल (कोट्टायन के. वेणुगोपाल) भारत के उच्चतम न्यायालय में प्रैक्टिस कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।

2. आपका जन्म सितम्बर 06, 1931 को हुआ। आपने वर्ष 1954 में राजा लखमगौड़ा लॉ कॉलिज, बेलगाम (कर्नाटक) से विधि में स्नातक की डिग्री हासिल की। वर्ष 1954 में आपने अधिवक्ता के तौर पर अपना नामांकन कराया। अपने इकसठ वर्षीय लंबे कॅरियर में आपने भारत के उच्चतम न्यायालय के साथ-साथ देश के उच्च न्यायालयों में कुछ अनेक महत्वपूर्ण मामलों में योगदान दिया। आप वर्ष 1979-80 के दौरान भारत के एडिशनल सालीसिटर जनरल रहे। आप अनेक भारतीय और अंतरराष्ट्रीय विधि एसोसिएशनों के सदस्य और उनमें से कई के अध्यक्ष भी हैं। आप तीन बार उच्चतम न्यायालय बार एसोसिएशन के अध्यक्ष, सार्कलॉ (सार्क देशों के अधिवक्ताओं की अंतरराष्ट्रीय एसोसिएशन) के अध्यक्ष, यूनियन इंटरनेशनले देज़ एडवोकाट्स (यूआईए) (अधिवक्ताओं की सबसे पुरानी एसोसिएशनों में से एक, जिसका मुख्यालय पेरिस में स्थित है) के अध्यक्ष तथा विभिन्न राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों की कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य रहे हैं। आप अमेरिकन बार एसोसिएशन के मानद् सदस्य हैं।

3. आपने भूटान के नए संविधान का प्रारूप तैयार करने के संबंध में किंगडम ऑव भूटान और उसकी संविधान प्रारूपण समिति को परामर्श दिया है। वर्ष 2004 में, श्रीलंका की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती चंद्रिका भंडारनायके कुमारतुंगा द्वारा श्रीलंका के तमिल क्षेत्रों में शक्तियों के अंतरण के संबंध में आपसे परामर्श मांगे जाने पर आपने उन्हें भी इस संबंध में अपनी सलाह दी। आप विधिक शिक्षा के क्षेत्र में गहरी रुचि रखते हैं और एम.के. नाम्बियार सार्क लॉ सेंटर की स्थापना के लिए राष्ट्रीय विधिक अध्ययन अकादमी एवं विधि अनुसंधान विश्वविद्यालय (एनएएलएसएआर), हैदराबाद तथा सभागार के निर्माण हेतु अपने कॉलिज, राजा लखमगौड़ा लॉ कॉलिज, बेलगाम को दान देने सहित आपने अनेक विभिन्न राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और लॉ कॉलिजों को दान देकर उनका मनोबल बढ़ाया है। आपने नेशनल यूनिवर्सिटी ऑव एडवांस्ड लीगल स्टडीज़, कोच्चि, राष्ट्रीय न्यायिक विज्ञान विश्वविद्यालय (एनयूजीएस), कोलकाता, नेशनल लॉ स्कूल यूनिवर्सिटी ऑव इंडिया (एनयूएएलएस), बंगलौर और कन्नूर विश्वविद्यालय में अपने स्वर्गीय पिता श्री एम. के. नाम्बियार के नाम से संवैधानिक विधि में चेयरों की स्थापना भी की है। आपने संवैधानिक विधि में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान करने की व्यवस्था भी की है। आपने ढेर सारे व्याख्यान दिए हैं और कानूनी विषयों पर अनेक लेख लिखे हैं।

4. आपको अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें वर्ष 2002 में पद्म भूषण, मानवाधिकारों, विधिक बहु-भाषायीवाद तथा बहु-संस्कृतिवाद में आपकी उपलब्धि की मान्यतास्वरूप बार एसोसिएशन ऑव ब्यूनस आयर्स और मटांजा, अर्जेंटीना से पदक और प्रशस्ति-पत्र सहित बार एसोसिएशन ऑव बगोटा, कोलंबिया से ग्रान्ड क्रास अवॉर्ड और पदक, मुख्यमंत्री, केरल से ग्लोबल अवॉर्ड, 2003 तथा केरल बार फेडरेशन से ईश्वर अय्यर डिस्टिंग्यूशड लॉअर अवॉर्ड तथा यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल से लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड आदि शामिल हैं। वर्ष 2010 में आपको उत्कल विश्वविद्यालय, ओडिशा द्वारा डॉक्टर ऑव लॉ की ऑनरिस कौसा उपाधि से सम्मानित किया गया।